पूजा, अर्चना, यजन, यज्ञ, इज्या, सपर्या, सेवा, मह, कृतु, कल्प, उपासना आादि पूजा के पर्यायवाची नाम हैं।

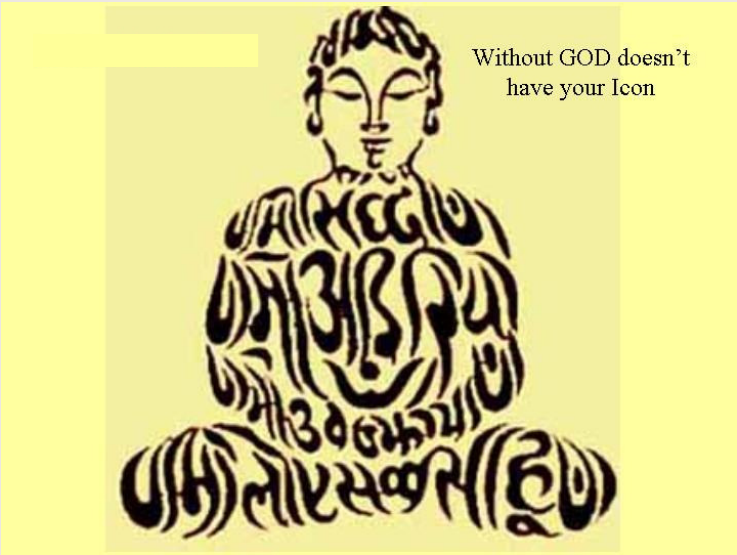

स्वस्तिक, ॐ, श्री, ह्रीं पूजा के प्रतीक हैं।

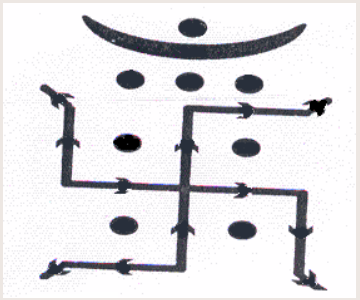

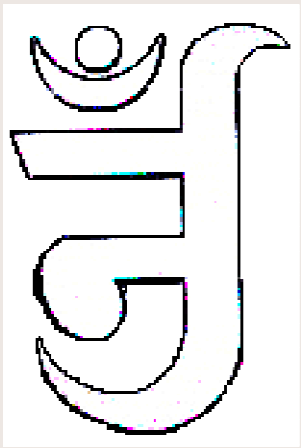

श्री ह्रीं

हमारी उत्सव – प्रियता ने धार्मिक अनुष्ठान व संकेतांक को भी प्रदर्शन बना दिया है।

जिसके दुष्परिणाम अनिष्टकारक हो सकते हैं।

फलतः हमारे जीवन में सुख, शान्ति एवं संतोष की जगह क्रोध, मान, आवेश एवं क्षोभ आने से अशान्ति बढ़ रही है।

विवाह पत्रिका, विजिटिंग कार्ड, ग्रीटिंग, आदि में प्रकाशित तीर्थंकरों के नाम, चित्र, श्लोक एवं **गलत संकेतांक**.....

श्री महावीराय नमः

मंगलं भगवान्

णमोकार मंत्र, आदि.....

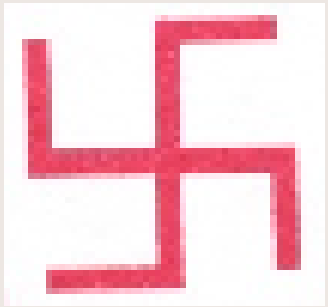

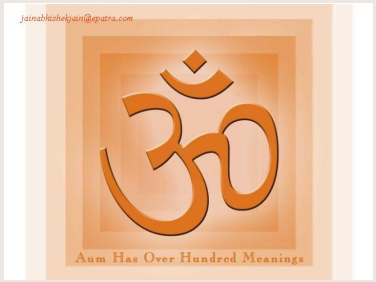

देखें, सोचें और समझें.....

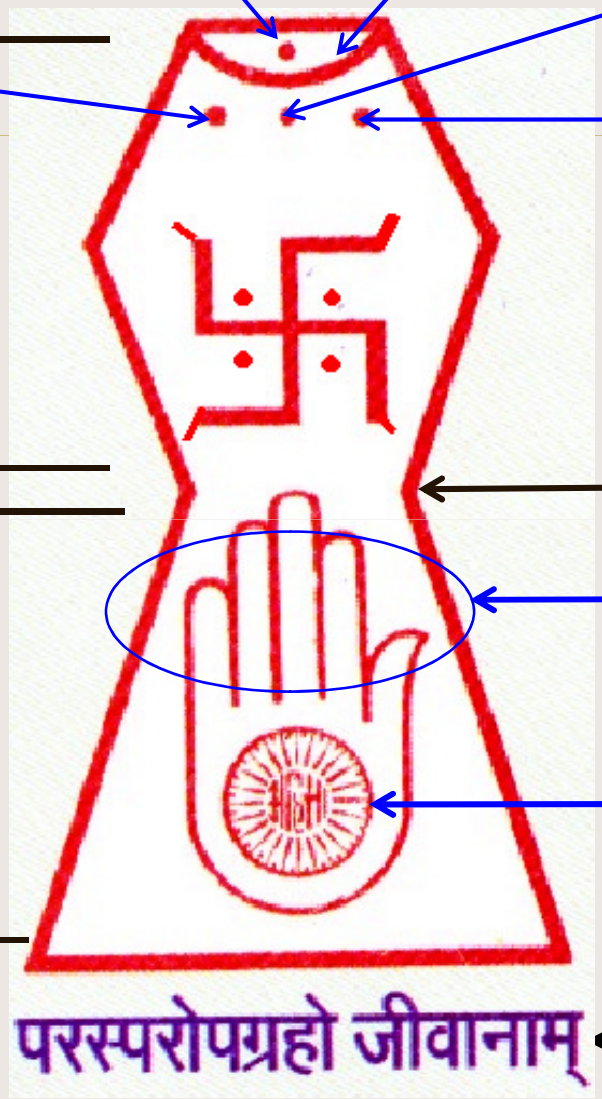
सिद्ध भगवान
सिद्ध शिला
सम्यग्ज्ञान
सम्यग्दर्शन
सम्यक्चारित्र
ऊर्ध्व लोक 16 स्वर्ग,
9 ग्रैवेयक,
9 अनुदिश एवं
5 अनुत्तर विमान
मध्य लोक
पंचपरमेष्ठी
अधो लोक
7 नरक एवं निगोद
24 तीर्थंकर
परस्परोपग्रहो जीवानाम्
जैन सिद्धान्त/
दर्शन

हमारी गल्तियाँ

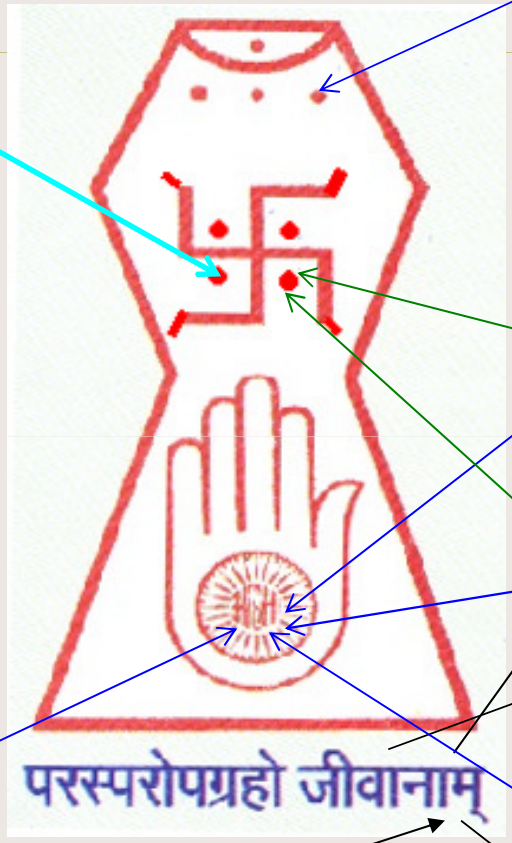

अ = अरिहंत

अ = अशरीरी (सिद्ध)

आ = आचार्य

उ = उपाध्याय

म = मुनि (साधु)

अ + अ = आ

आ + आ = आ

आ + उ = ओ

ओ + म् = ओम्

इस प्रकार ओम् में पंचपरमेष्ठी गर्भित हैं तथा   बीजाक्षर है।

स्वस्तिक हमारी पूजा का सार्थक उद्देश्य है।

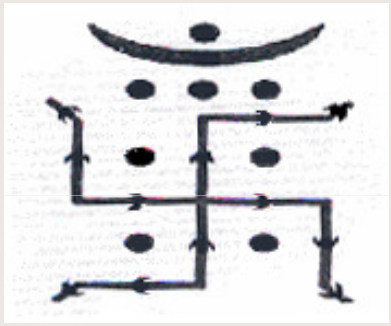

तथा हमारी अंतरंग भावना का प्रतीक है।

हे भगवन्! इस त्रस नाली में निगोद से स्वर्गों की यात्रा करते हुए (क्र.-1) अनादिकाल से चारों गतियों की 84 लाख योनियों में जन्म मरण कर रहा हूँ। (क्र.-2) खोटे कर्म करके कभी अधोगति नरक में गया हूँ। (क्र.-3) हे प्रभु! शक्ति देना कि ऐसे कार्य नहीं करूं जिससे नरक जाना पड़े (क्र.-4) कभी छल कपट करके तिर्यंच गति में गया (क्र.-5) मैं तिर्यंच गति में न जाने का संकल्प करता हूँ। (क्र.-6) कभी शुभ भावों से मरण कर देव गति को प्राप्त हुआ (क्र.-7) मैं असंयमी देव भी नहीं होना चाहता (क्र.-8) कभी शुभ संकल्प व्रतादि धारण कर मानव पर्याय पाई (क्र.-9) मैं इसमें उत्कृष्ट संयम पालन करने की भावना करता हूँ। (क्र.-10) यह परिभ्रमण मूलतः अज्ञान मिथ्यात्व मोह एवं विषय कषाय के कारण से हो रहा है- यथा.

1. कित निगोद कित नारकी कित...
2. चौदह राजु उत्तुंग नभ.....
3. भव विकट वन में कर्म वैरी...
4. मोह महामद पियो अनादि...
5. मैं भ्रमों अपन को बिसर आप...

अज्ञान मिटाने के लिए मैं संकल्प करता हूँ कि प्रथमानुयोग (क्र.-11) करणानुयोग (क्र.-12), चरणानुयोग(क्र.-13), एवं द्रव्यानुयोग (क्र.-14), का स्वाध्याय करके मैं सुख से शून्य इन चारों गतियों से छूटने के लिए भी सम्यक्दर्शन (क्र.-15), सम्यक्ज्ञान (क्र. 16), एवं सम्यक्चारित्र (क्र.-17) को प्राप्त करूँगा तथा रत्नत्रय की पूर्णता करके सिद्ध शिला (क्र.-18), से ऊपर मानव पर्याय के परम लक्ष्य पंचम गति सिद्ध पद को प्राप्त करूंगा (क्र.-19),

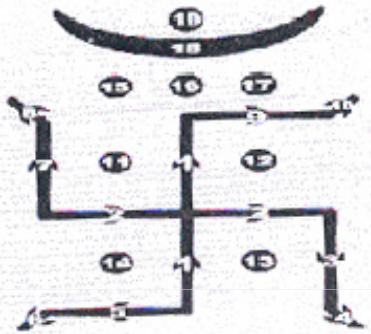

1. संसार रेखा (त्रसनाली निगोद से मोक्ष की ओर)
2. जन्म मरण की रेखा ऊर्ध्वगमन
3. नरक गति (नीचे की ओर)
4. वज्र- नरक गति में न जाने का संकल्प
5. तिर्यंच गति
6. वज्र तिर्यंच गति में न जाने का संकल्प
7. देव गति (ऊपर)
8. वज्र देवगति में न जाने का संकल्प
9. मनुष्यगति
10. वज्र मनुष्यगति में न रहने का संकल्प
11. प्रथमानुयोग
12. करणानुयोग
13. चरणानुयोग
14. द्रव्यानुयोग
15. सम्यक्दर्शन
16. सम्यक्ज्ञान
17. सम्यक्चारित्र
18. सिद्धशिला
19. सिद्ध भगवान

श्री

लक्ष्मी का प्रतीक

बाह्य लक्ष्मी – समवसरण

अंतरंग लक्ष्मी – अनंत चतुष्टय

(अनंत ज्ञान, दर्शन, सुख एवं बल)

ह्रीं

चौबीस तीर्थंकरों का प्रतीक है।

सोचें !

यह सभी सामग्री रद्दी की टोकनी एवं कूडाघर में पहुँचती है।

उससे धर्म की कितनी अवमानना होती है ?

उसका दोष किसे लगेगा ?